जोन ऑफ आर्क

जोन ऑफ आर्क

जोन ऑफ आर्क एक गहरी धार्मिक आस्था वाली गांव की लड़की थी. उसने बचपन में खेत में काम किया. अंग्रेजी सैनिक उसे एक चुड़ैल मानते थे और उससे डरते थे. फ्रांसीसी सैनिक उसे एक संत मानते थे और उसका पीछा करते थे. फ्रांसीसी दरबारियों और बिशपों को उससे जलन थी. उन्होंने उसके साथ विश्वासघात किया. किसे पता क्या सही था: ओर यह हम सभी जानते हैं कि उसने फ्रांस को बचाया.

जोन ऑफ आर्क

अंग्रेज सम्राट किंग हेनरी पंचम ने 1415 में, एगिनकोर्ट की लड़ाई में फ्रेंच पर विजय हासिल की. हेनरी द्वारा इस जीत ने इंग्लैंड को फ्रांस के एक बड़े हिस्से का मालिक बना दिया. हेनरी ने खुद एक फ्रांसीसी राजा की बेटी से शादी की थी, और उन्हें फ्रांसीसी सिंहासन का उत्तराधिकारी नामित किया गया था.

हालांकि, 35 साल की उम्र में हेनरी की मृत्यु हो गई. पर उनके बेटे के पास अपने पिता के जंगी गुण बिल्कुल नहीं थे. एक समय अंग्रेजी सेना ने उत्तरी फ्रांस को अपने कब्ज़े में रखा था, लेकिन हेनरी पंचम ने जो कुछ भी जीता था, वो सब लगभग तीस वर्षों में खो गया.

इसका कारण लोरेन के छोटे से गांव डोमरेमी में जन्मी एक किसान लड़की थी. उसका नाम जोन था, उसे इतिहास में "जोन ऑफ आर्क" के रूप में हमेशा याद किया जायेगा.

हमारे लिए यह कल्पना करना बहुत मुश्किल है कि उन दिनों फ्रांस कैसा था. वहां कोई भी सुरक्षित नहीं था. सैनिक, इधर-उधर घूमते हुए, खेतों और गाँवों को उजाड़ते थे. उनमें से डोममेरी का गाँव भी था जहाँ जोन रहती थी. यहां तक कि मवेशी भी चेतावनी की घंटी की आवाज़ समझते थे और उसे सुनते ही सुरक्षित स्थान पर भाग जाते थे.

बचपन में जोन अन्य बच्चों से बहुत अलग नहीं थी. वह वही खेल खेलती थी, जो सब बच्चे खेलते थे. तब प्यारी लकड़ियां खेतों में घूमती थीं. वो खेत आज भी डोमरेमी गांव को घेरे हुए हैं. उसने अपने पिता के खेत में काम किया, मवेशियों का पालन-पोषण किया, और सर्दियों की शामों में उसने कताई और सिलाई सीखी.

जोन एक शांत, धार्मिक लड़की थी. वो अपने माता-पिता के साथ चर्च जाना पसंद करती थी. कभी-कभी, जब दूसरे बच्चे गाँव की हरियाली में खेलते और हँसते, तो वो गाँव के चर्च में प्रायश्चित करती थी. अन्य बच्चों को वो बहुत अजीब लगती थी, लेकिन जोन एक मजबूत, स्वस्थ लड़की थी और उसने हमेशा अपनी पसंद के काम किये.

तीस साल बाद, गाँव के जानकार लोगों से उस लड़की के बारे में पूछा गया. हालांकि यह बहुत पुरानी बात है, लेकिन हमारे पास उन बातों का रिकॉर्ड है. यह रिकॉर्ड निश्चित रूप से फ्रेंच में था, लेकिन उनके शब्द थे :

"जोन को डोमरेमी के सभी लोग प्रिय थे. वह विनम्र, सरल और एक धर्मनिष्ठ लड़की थी. वह खुशी-खुशी चर्च और पवित्र स्थानों पर गई; उसने वहां काम किया, सेवा की, खेतों में काम किया और घर का सभी कामकाज किया."

डोमरेमी के साधारण लोग बहुत आश्चर्यचकित होते अगर उन्हें पता चलता कि अठारह साल की होने से पहले, वो शांत छोटी लड़की फ्रांस में पैदा होने वाली सबसे प्रसिद्ध महिला बन गई थी.

जोन को चर्च की घंटियाँ सुनना बहुत पसंद था. एक दिन जब पिता के बगीचे में उसे घंटियों के स्वर सुनाई दिए, तो उसे लगा कि उनमें कोई सन्देश छिपा था. उस समय वो केवल तेरह वर्ष की थी, और पहली बार उन घंटियों को सुनने के बाद उसे "बहुत डर लगा."

घंटियों की आवाजें मिलनसार और दयालु थीं. उन्होंने उससे हमेशा एक अच्छी लड़की बनने और चर्च जाने को कहा. वैसे जोन कुछ और बनना भी नहीं चाहती थी, इसलिए वो स्वेच्छा से चर्च गई. इसमें कुछ भी अजीब नहीं था.

लेकिन जल्द ही जोन को आवाज़ें सुनाई देने के साथ अजीब दृश्य भी दिखाई देना शुरू हुए. पहले तो वे दृश्य कुछ धुंधले थे, लेकिन बाद में जोन ने कहा, "मैंने अपनी आँखों से उन्हें स्पष्ट रूप से देखा जैसे कि मैं आपको देखती हूं और जब वे गायब हो जाते थे तो मैं रोती थी और बहुत दुखी होती थी." जोन को उन आवाज़ों से इतना प्यार हो गया था कि वह घंटी बजाने वालों को उपहार देती थी.

जब वो सोलह वर्ष की हुई तब उसे सेंट माइकल और लोरेन के दो संतों - सेंट कैथरीन और सेंट मार्गरेट के स्पष्ट दर्शन होने लगे थे.

उनके पास डोमरेमी की इस किसान लड़की के लिए एक नया संदेश था. उन्होंने कहा कि वो अंग्रेजी को समुद्र में खदेड़कर अपने देश फ्रांस की मुक्तिदाता बन सकती थी. वह फ्रांस की सेनाओं को जीत के लिए नेतृत्व करेगी, और युवा राजा चार्ल्स सातवीं, की रिम्स में ताजपोशी करेगी.

फ्रांसीसी सैनिक हर जगह अंग्रेजों के हाथों पराजित हो रहे थे, और फ्रांसीसी लोग पूरी तरह निराश थे. हर जगह फ़सलें असिंचित पड़ी थीं या खेतों में सड़ रही थीं. सारा व्यापार एक ठहराव पर था.

यह असंभव लग रहा था कि एक साधारण, गाँव की लड़की उन हजारों मंझे हुए अंग्रेज सैनिकों के खिलाफ कुछ कर सकती थी. अंग्रेज सैनिक पूरे देश को आतंकित कर रहे थे. पहले तो जोन ने "आवाज़" की बात को मानने से इंकार कर दिया. हालाँकि इस प्रकार की एक पुरानी किंवदंती भी थी कि लोरेन की सीमा में जन्मी एक नौकरानी एक दिन फ्रांस को बचाएगी. इस बात की बहुत संभावना है कि जोन ने यह भविष्यवाणी सुनी हो, और घंटियों को सुनने के बाद उसने खुद को चुनी हुई नौकरानी के रूप में मानना शुरू कर दिया हो.

ऑरलियन्स शहर को 10,000 अंग्रेजी सैनिकों ने घेर लिया था. यदि अंग्रेज़ों ने उसे जीत लिया, तो फ्रांस के पूरे दक्षिणी हिस्से में उनके लिए विजय का रास्ता खुला जायेगा.

जोन की आवाज़ों ने उससे ऑरलियन्स जाने और शहर को अंग्रेजी सैनिकों से मुक्ति दिलाने को कहा.

सबसे पहले वो हैरान और दुखी हुई. अपने मन की व्यथा बताने वो अपने पिता के पास गई, जो डोमरेमी गाँव के एक प्रमुख व्यक्ति थे. हालाँकि वो केवल सोलह वर्ष की थी, लेकिन जोन में किसी गांव की लड़की की अच्छी समझदारी थी. लेकिन अपने पिता की नज़रों में वो अभी भी एक छोटी बच्ची थी. पिता उस पर हँसे और उन्होंने उसकी बातों को मूर्खतापूर्ण बताया.

जोन दुबारा फिर से मवेशियों को चराने और खेतों में काम करने वापिस चली गई, लेकिन वे आवाजें उसे लगातार सुनाई देती रहीं. वो फिर से अपने पिता के पास गई. इस बार पिताजी को बहुत गुस्सा आया. उन्होंने कहा मूर्ख बनने की बजाय, वह उसे खुद अपने हाथों से समुद्र में डुबो देंगे. बेशक, उन्होंने ऐसा किया नहीं. लेकिन उनका मानना था कि उनकी बेटी जो करना चाहती थी, वो मूर्ख था और दुष्ट भी.
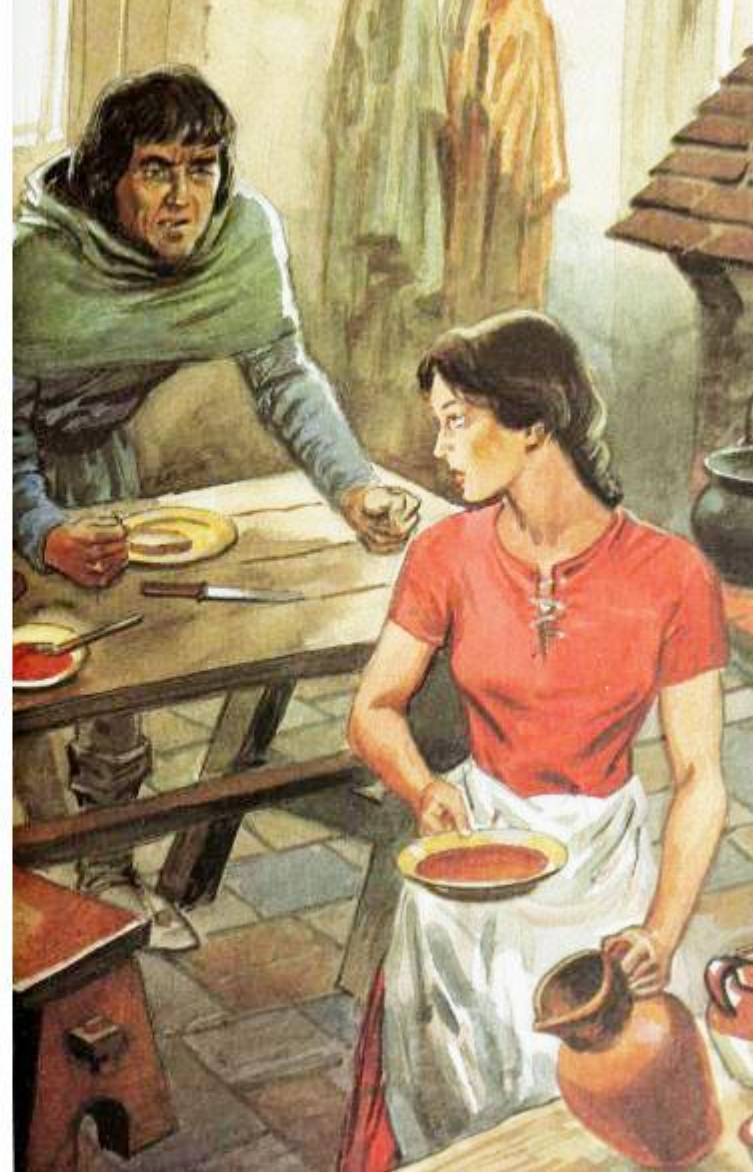
जोन एक बहुत ही धार्मिक लड़की थी, और वह दृढ़ता से मानती थी कि परमेश्वर आवाज़ों के माध्यम से उससे बात करते थे. उसने उनको नज़रअंदाज़ नहीं किया.

डोमरेमी से लगभग दस या बारह मील की दूरी पर, वाउकुल्यर्स के चारदीवारी वाले शहर की कमान रॉबर्ट बॉडरिकॉट नाम के एक फ्रांसीसी रईस ने संभाली थी. जोन ने उसके पास जाने और उससे मदद माँगने की ठानी. वह जानती थी कि उसके पिता कभी भी इसकी अनुमति नहीं देंगे, इसलिए वो अपनी माँ के एक रिश्ते के साथ रहने के लिए वैकुलेयर्स के पास एक गाँव में गई.

उसने रिश्तेदार को बताया कि उसकी आवाज़ ने उसे क्या करने का आदेश दिया था. रिश्तेदार को शक था, लेकिन जोन दृढ़ थी और जिद कर रही थी. अंत में वो जोन को डे बॉडरिकॉट से मिलवाने ले जाने को तैयार हुआ.

रॉबर्ट डी बॉडरिकॉट ने शुरू में जोन के साथ कुछ भी करने से इनकार किया. हम इस फ्रांसीसी रईस की हैरत की कल्पना कर सकते हैं जब एक साधारण किसान की लड़की, जो बहुत ही घिसे-पिटे, लाल ऊनी कपड़े पहने थी ने उसे बताया कि "फ्रांस को बचाने के लिए उसे स्वर्ग भेजा गया था."
"कान मरोड़कर उसे वापिस घर भेज दो," उन्होंने लैकार्ट से कहा. लेकिन जोन पर उसका कोई असर नहीं हुआ. फ्रांसीसी सैनिक हर जगह अंग्रेजों से हार रहे थे. कुछ तो करना ही था, और फिर डे बॉडरिकॉट को लगने लगा कि शायद जोन की बात में कुछ सच्चाई भी हो.

वो अंधविश्वास का काल था. लोग अभी भी चुड़ैलों और स्वर्ग के प्रत्यक्ष संकेतों पर विश्वास करते थे. रॉबर्ट डी बॉडरिकॉट ने सोचा कि अगर फ्रांसीसी सैनिकों को यह पता चलेगा कि जोन को सच में उनके नेतृत्व के लिए स्वर्ग द्वारा भेजा गया है, तो शायद वो कुछ हिम्मत से लड़ें.

फ्रांसीसियों ने अभी-अभी एक युद्ध हारा था. अंग्रेज़ों के कैंप में हेरिंग मछलियों की एक बड़ी खेप जा रही थी. फ्रेंच सैनिक उन मछलियों को जाने से रोकने में नाकाम रहे. शहर के अंदर फ्रांसीसी चौकी अकाल से मजबूर होकर आत्मसमर्पण करने को तैयार थी. रॉबर्ट डी बॉडरिकॉट को, फ्रेंच सेना के लिए जोन, एक अंतिम उम्मीद लगी.

चार्ल्स सप्तम, वैकौलेर्स से तीन सौ मील दूर चिनॉन में था. वहां पहुंचने के लिए, जोन को अंग्रेजी के कब्ज़े वाले रस्ते से जाना होगा. वहां बरगंडी के सैनिक भी तैनात थे जो फ्रांस के खिलाफ, अंग्रेज़ों का साथ दे रहे थे. जोन के लिए यह एक बहुत ही खतरनाक यात्रा होगी.

जोन, दो युवा फ्रांसीसी महानुभावों के साथ घोड़ों पर बैठी. उसे अंदर से आदमी के कपड़े पहनने की आवाज़ आई. इसलिए उसने अपने बालों को छोटा किया और एक गहरे रंग का मोटा कोट पहना. रॉबर्ट डी बाउड्रीकोर्ट ने उसे एक पुरानी तलवार देते हुए कहा, "जाओ और जो संभव हो करो!" यह वाक्य बहुत उत्साहजनक नहीं था.

सर्दी का मौसम था. अंग्रेजी सैनिकों से बचने के लिए पार्टी को छोटे-छोटे उप-मार्गों से यात्रा की जो सिर्फ पगडंडियां थीं. उन्हें दो नदियाँ भी पार करनी पड़ीं, क्योंकि पुलों पर अँगरेज़ सैनिक तैनात थे.

यात्रा में ग्यारह दिन लगे. अक्सर उन्हें रातें खुले में गुजारनी पड़ीं क्योंकि किसी के घर रुकना बहुत खतरनाक होता. बहुत थके हुए वे चिनोन के छोटे शहर में पहुंचे. वहां उन्हें पता चला कि राजा के सामने पेश होना कोई आसान काम नहीं था.

जब जोन ऑफ आर्क अपने घोड़े से महल तक चढ़ने के लिए चिनॉन में उतरी, तब से शहर बहुत कम बदला है. वहां के पुराने मकान और खड़ी, टेढ़ी-मेढ़ी गलियाँ वैसी ही हैं जैसे पाँच सौ साल पहले उन्हें जोन ने देखा था.

महल, जो अब एक खंडहर है, तब वियेन नदी के ऊपर एक ऊंची चट्टान पर खड़ा था. वियेन नदी, लॉयर की सहायक नदी है. दो सौ साल पहले इस महल में एक अंग्रेजी राजा, रिचर्ड कोइरर डे लायन का दरबार था. खंडहर में एक कमरे की दीवार पर एक खुदा हुआ पत्थर है, जो बताता है कि, इस कमरे में कैसे जोन ऑफ आर्क ने पहली बार, चार्ल्स सप्तम से मुलाकात की.

चार्ल्स शरीर और दिमाग दोनों से कमजोर था, और पूरी तरह से अपने सलाहकारों की दया पर निर्भित था. पहले तो सलाहकारों ने उसे जोन से मिलने से इनकार कर दिया, लेकिन जब लोगों ने उसके मिशन के बारे में सुना तो उन्हें लगा कि जोन को नज़रअंदाज़ करना खतरनाक होगा.

उनमें से किसी ने भी जोन की अंदरूनी आवाज़ों पर विश्वास नहीं किया. जोन को बदनाम करने के लिए, उन्होंने चार्ल्स को एक साधारण दरबारी के रूप में पेश किया और एक अन्य युवक को सिंहासन पर बैठाया. वो एक परीक्षा थी कि जोन की आवाज़ें सच थीं या नहीं. अगर वो सच थीं, तो जोन असली राजा को ज़रूर पहचान जाएगी.

जोन, लम्बी यात्रा से थकी थी और अभी भी कोट पहने थी. उसे शानदार दरबार के बीच में लाया गया. उसने दरबार में अमीर कपड़े पहनीं महिलाओं पर अचरज किया. दरबारी उसे देखकर हँसे. उन्होंने सोचा कि अब जोन की मूर्खतापूर्ण कहानी ख़त्म होगी.

जो लोग वहां मौजूद थे उनके अनुसार वो किसान लड़की सिंहासन पर युवक को देखकर मुस्कुराई और उसने अपना सिर हिलाया. फिर वो सीधे दरबारियों के बीच चार्ल्स के पास गई, और अपने घुटनों पर टिककर बोली, "मैं भगवान की दूत हूं. मैं आपको बताने आई हूँ कि आप फ्रांस के सच्चे राजा हैं."
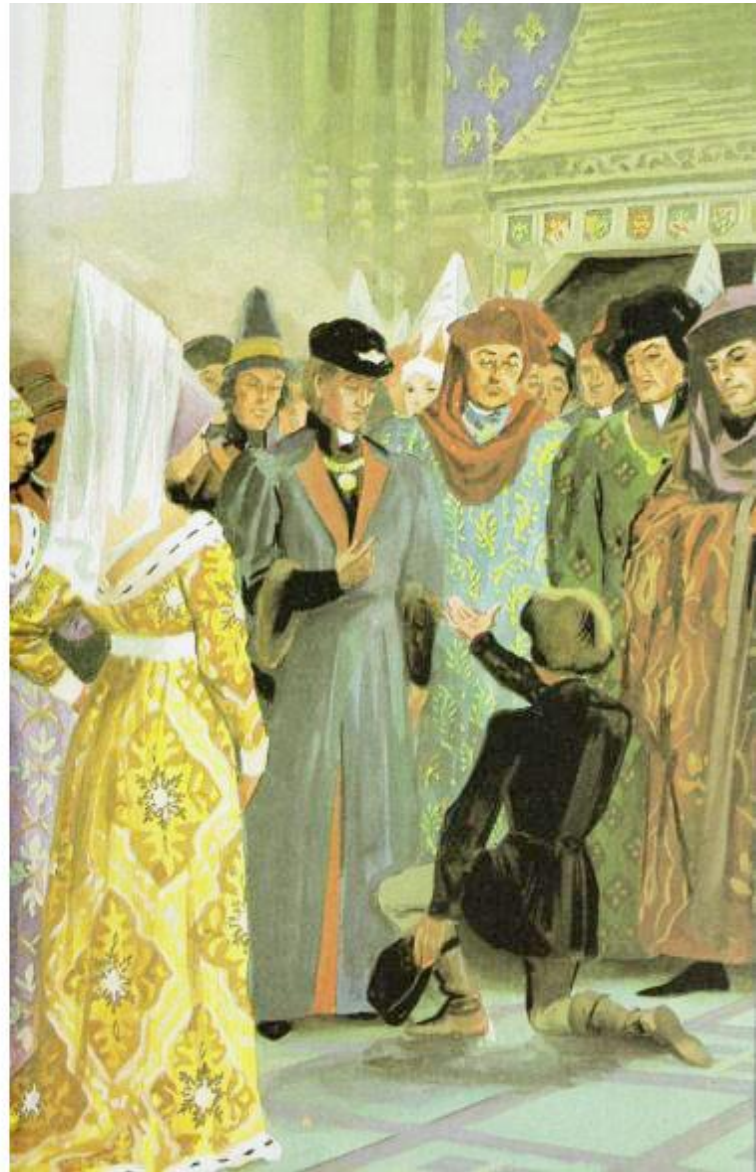
चार्ल्स को वाकई में लगा कि जोन को सच में उसके राज्य को बहाल करने के लिए भेजा गया था. लेकिन सलाहकारों को अभी भी संदेह था. उन्होंने जोर देकर कहा कि जोन की चर्च के विद्वानों द्वारा जांच की जानी चाहिए.

जोन को समझ नहीं आया कि वो लोग इतना उपद्रव क्यों मचा रहे थे. उसने एक साधारण किसान लड़की की ईमानदारी से उनके सभी सवालों के जवाब दिए. "मैं पढ़-लिख नहीं सकती हूँ," उसने कहा, "लेकिन मुझे पता है कि मेरी आवाज़ों ने मुझे ऑरलियन्स की घेराबंदी को तोड़ने और रिम्स में राजा की ताजपोशी की आज्ञा दी है."

जोन एक गांव की लड़की थी जो शायद शर्मिंदा या भयभीत होती. पर वो न तो शर्मिंदा हुई और न ही भयभीत. जब किसी ने उससे पूछा कि उसे किस लहजे में आवाज़ें सुनाई देती थीं तो उसने मुस्कुराते हुए प्रश्न पूछने वाले से कहा, "आपसे बेहतर लहज़े में."

चर्च के पुजारी उससे आश्वस्त हुए लेकिन चार्ल्स जिन सलाहकारों से घिरा था उन्होंने जोन की बात नहीं मानी. लेकिन फ्रांस का हाल बद से बदतर होता जा रहा था. इसलिए वे कुछ भी करने को तैयार थे. हालाँकि उनकी राय में जोन केवल एक बहकी हुई ग्रामीण लड़की थी, उन्होंने सोचा कि सैनिक उसे एक प्रकार का शुभ संकेत मान सकते हैं. फिर वे उसे ऑरलियन्स भेजने को सहमत हुए.

फ्रांसीसी सैनिकों को प्रभावित करने के लिए, जोन को एक युद्ध का सूट-कवच दिया गया, जो सफेद और नीले रंग का था. उसके सामने एक बैनर था जिस पर क्राइस्ट (यीशू) की तस्वीर थी. कहा जाता है कि वो उसमें "पूर्ण दिव्य" दिखती थी.

अन्य लोगों के बारे में भी जोन ऑफ आर्क जैसे ही कई कहानियां और किंवदंतियां गढ़ी गई हैं. यह लोग देश के इतिहास में प्रसिद्ध हुए थे. उनमें से कुछ बातें सच हो सकती हैं, कुछ नहीं.

जोन ऑफ आर्क के बारे में बताई गई कहानियों में से एक उस घोड़े के बारे में है जो उसे सवारी करने को दिया गया. यह घोड़ा वैकुलेयर्स वाले घोड़े की तुलना में अधिक उत्साही था. वो घोड़ा अपने अगले पैरों के बल खड़ा हो गया और उसने जोन को चढ़ने की अनुमति नहीं दी. "इसे यीशू की सलीब पर ले जाओ" जोन ने कहा. घोड़े को बाजार में स्थित क्रॉस पर ले जाया गया और वहां वो चुपचाप खड़ा रहा.

फ्रांसीसी नायक मार्टेल की तलवार की किंवदंती भी इसी प्रकार की है. उसने छह शताब्दी पहले फ्रांस को मुसलमानों से बचाया था. जोन ने उस तलवार को लाने को कहा जो सदियों से फेयरबिस के एक चर्च में वेदी के पीछे छिपी थी. कोई भी उसके बारे में नहीं जानता था, लेकिन जब उन्होंने वेदी के पीछे खोदा, तो उन्हें वहां तलवार मिली जो उन्होंने जोन को दी.
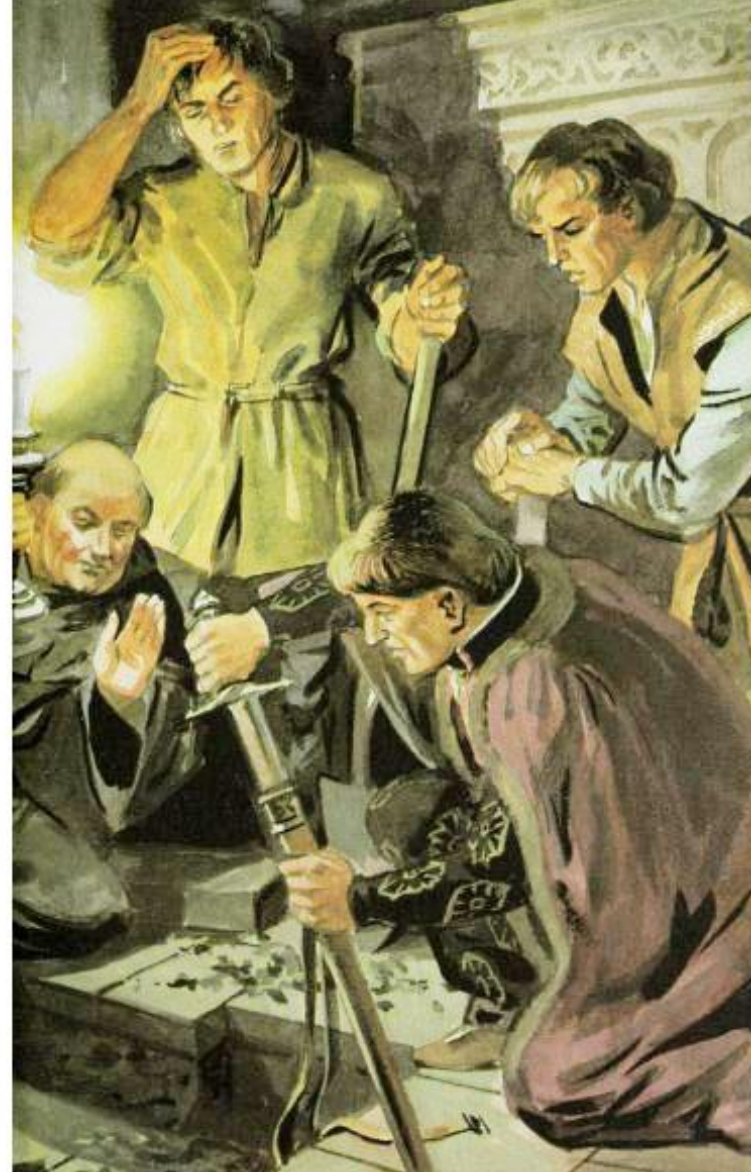
उसके बाद जोन को ब्लिस में कुछ लोगों के साथ भेजा गया. ब्लिस, चिनॉन और ऑरलियन्स के बीच में स्थित था. यहां उसे 6,000 सैनिकों की कमान दी गई. चार्ल्स के सलाहकारों को लगा कि जब सत्रह साल की एक किसान लड़की को एक सेना की कमान सम्भालनी पड़ेगी तो उसके होश उड़ जायेंगे और फिर वो डोमरेमी वापस भाग जाएगी.

पर जोन पक्की मिट्टी की बनी थी. शुरू में सैनिकों को कुछ आश्चर्य हुआ पर उन्हें जल्दी ही पता चला कि उन्हें आदेशों का पालन करना है. उन्हें तब और भी हैरानी हुई जब उसने जोर देकर कहा गया कि उन्हें युद्ध से पहले चर्च जाना होगा.

कमांडरों में से एक ला हिरे नाम का गैस्कनी का रहने वाला एक व्यक्ति था. वह एक अच्छा और बहादुर सेनापति था, लेकिन बहुत सारे सैनिकों की तरह, वो भी खराब भाषा और गाली-गलौज का इस्तेमाल किया. जोन ने उसे वो सब बंद करने का आदेश दिया. वो बहुत हैरान हुआ और उसने आज्ञा का पालन किया.

अंग्रेज जोन से बहुत चिढ़े थे. वो जोन को एक चुड़ैल मानते थे जिसने फ्रांसीसी राजा पर जादू-टोना चलाया था. उन्हें समझ नहीं आ रहा थे कि वे क्या करें. वर्ष 1428 में सभी लोग मानते थे कि चुड़ैलों में नुकसान करने की शक्ति होती थी. शेक्सपियर ने अपने नाटक में, जोन का अंग्रेजी पक्ष दर्शाते हुए जोन को फ्रांस की चुड़ैल बुलाया था.

ब्लोइस से पहले, जोन, जो पढ़-लिख नहीं सकती थी, ने इंग्लैंड के राजा और उनके सेनापतियों को एक पत्र लिखा, जिसमें उसने कहा कि उसे ईश्वर ने फ्रांस भेजा था ताकि वहां सही राजा को बहाल कर सके. उसने अंग्रेज़ों से मांग की कि वे उन सभी फ्रांसीसी शहर को छोड़ दें जिस पर उन्होंने कब्जा किया था.

कोई जवाब न मिलने पर जोन सेना के प्रमुखों के साथ ऑरलियन्स की ओर बढ़ी. वो यह पता लगाना चाहती थी कि क्या अंग्रेजों ने शहर के चारों ओर "बैस्टिल्स" नामक मजबूत चौकियां बनाई थीं. उसका इरादा अंग्रेजी की निगाह से बचकर अपने सैनिकों के साथ शहर में प्रवेश करने का था. इससे उसकी सेना में 6,000 सैनिक जुड़ जाएंगे, जो अंग्रेजी पर हमला करने के लिए पर्याप्त होंगे.

जब वह ऑरलियन्स पहुंची, तो जोन ने पाया कि फ्रांसीसी कमांडरों ने उसे धोखा दिया था. वे अत्यंत गुस्से में थे क्योंकि अब उनके ऊपर कोई और ऊंचा कमांडर था. वे चाहते थे कि जोन विफल हो, और इसलिए वे उसे लॉयर नदी के दक्षिण में ले गए, जबकि ऑरलियन्स उत्तर की ओर था. एक विपरीत हवा ने नदी की धार को पार करना मुश्किल बनाया.

फिर अचानक हवा की दिशा बदल गई. इससे अंग्रेजों को और भी लगा कि जोन वाकई में एक चुड़ैल थी, और उसने अपने पक्ष में हवा को बहाने के लिए लिए जादू-टोना इस्तेमाल किया था.

जोन भूखे सैनिकों के लिए बहुत जरूरी भोजन और हथियार लाई थी. चूंकि सभी सैनिकों के नदी पार करने के लिए पर्याप्त नावें नहीं थीं, इसलिए जोन ने ज़्यादातर को नीचे एक पुल द्वारा भेजा. उसने खुद नदी को नाव से पार किया. उस पार भीड़ ने बेहद ख़ुशी से जोन का स्वागत किया. जोन की कहानी उन तक पहले ही पहुँच गई थी, और लोग सुनिश्चित थे कि अब स्वर्ग उनका साथ देगा.

जब अंग्रेजी सैनिकों ने चर्च की घंटियों की आवाज़ और लोगों की जयकार सुनी, तो वे अंधविश्वासी भय से डर गए. अगली सुबह जब नदी पार करके फ्रांसीसी सैनिकों ने शहर में मार्च किया, तो अंग्रेज 'चुड़ैल' से इतने डरे कि उनकी उन्हें रोकने की कोई हिम्मत नहीं हुई.

उन दिनों सेनायें एक-दूसरे का आमने-सामने मुकाबला करती थीं. जोन किसी को मरने नहीं देना चाहती थी. दोनों सेनाओं के बीच नदी थी, इसलिए जोन ने अंग्रेजी कमांडर को वहां से चले जाने को कहा. पर अंग्रेज़ों के जोन का मज़ाक उड़ाया और फिर वो उदास होकर अपने क्वार्टर में लौट आई.

हालाँकि, उसे लड़ने की बात नापसंद थी, पर जोन अपने किसी भी सैनिक की तरह बहादुर थी. उसने उन्हें बार-बार उकसाया, उनसे आग्रह किया और अपनी तलवार लहराई. हालांकि उसके तलवार चलाने की बात का कोई रिकॉर्ड नहीं है. उसे तलवार की जरूरत ही नहीं पड़ी.

अंग्रेजी को भगाने के लिए, उन मजबूत चौकियों पर आक्रमण करना आवश्यक था, जिनसे अंग्रेज़ों ने ऑरलियन्स को घेरा था. जब जोन आराम कर रही थी तब फ्रांसीसी कमांडरों ने उनमें से एक चौकी ऑगस्टाइन पर हमला करने के लिए मार्च किया. लड़ाई की आवाज सुनकर जोन जगी और फिर तेजी से कवच पहनकर लड़ाई के शोर की ओर बढ़ी.

इस लड़ाई में अंग्रेजों का पलड़ा भारी था और जब जोन दिखाई दी तो फ्रांसीसी सैनिक पीछे हटने वाले थे. जोन के चमकते हुए कवच और बैनर ने और उससे भी अधिक जोन की उपस्थिति ने फ्रांसीसी सेनाओं में नया जोश भर दिया. वे "दासी! दासी!" चिल्लाते हुए आगे बढे. अँगरेज़ सैनिक जादू-टोने से भयभीत होकर अपनी दुम दबाकर भागे.

दो दिन बाद जोन ने उसे अब एक और मजबूत चौकी - टॉरेल पर अपने समर्पित सैनिकों का नेतृत्व किया. जोन हमले में सबसे आगे थी. फिर उसने सीढ़ी से किले की दीवार पर चढ़ने के लिए पहला कदम रखा. चढ़ते समय दुश्मन के कंधे में तीर लगने से वो घायल हो गई.

जोन के घाव को मलहम-पट्टी करने के लिए पीछे ले जाया गया. जोन को ज़ख्मी देख फ्रांसीसी सैनिकों का दिल टूट गया. फ्रांसीसी कमांडर डोनॉइस अपने सैनिकों को पीछे हटने का आदेश देने वाला था, तभी जोन वहां दुबारा मौजूद हुई और फिर उस मजबूत चौकी पर कब्जा कर लिया गया.

ऑरलियन्स की घेराबंदी खत्म हो गई थी. निराश, और यह मानकर कि जादू-टोने के खिलाफ लड़ने की कोशिश करना बेकार थी, अंग्रेज वहां से दूर चले गए. शहर में सामान्य लोग ख़ुशी मना रहे थे. चर्च लोगों से भरे हुए थे, जिनका नेतृत्व स्वयं जोन कर रही थी. उसने जीन के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया.

फ्रांस में कुछ सलाहकारों और पुजारियों को छोड़कर, जो जोन से ईर्ष्या करते थे, हर कोई मानता था कि जोन को देश को बचाने के लिए चमत्कारिक रूप से भेजा गया था. सैनिक कहीं भी उसके पीछे-पीछे चलने के लिए तैयार थे. उससे ज़्यादा महत्वपूर्ण था, कि अंग्रेजी सैनिकों ने सिर्फ आधी-अधूरे लड़ाई लड़ी, और जब उन्हें पता चला कि 'चुड़ैल' फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व कर रही थी तब वे मैदान छोड़कर भाग गए.

जोन ऑफ आर्क ने ऑरलियन्स शहर को जो राहत दिलाई उसे लोग कभी नहीं भूले. जोन ऑफ आर्क की स्मृति में उन्होंने एक प्रतिमा बनाई गई है, और हर साल वहां घेराबंदी की सालगिरह मनाई जाती है.

टॉरेल्स की मज़बूत चौकी के कब्ज़े को विशेष रूप से याद किया जाता है. इसने फ्रेंच जीत को सुनिश्चित किया. लॉयर नदी के बाएं किनारे पर एक साधारण क्रॉस स्थापित किया गया. वो किले के स्थान को दर्शाता है.

ऑरलियन्स की जीत केवल एक शुरुआत थी. फ्रांस में अभी भी हजारों अंग्रेजी सैनिक थे, जो फ्रांसीसी शहरों पर कब्जा कर रहे थे, गांवों को जला रहे थे और हर जगह विनाश फैला रहे थे. जोन को अपने आदेश को पूरा करने और चार्ल्स की ताजपोशी से पहले इन अंग्रेज़ सैनिकों को पराजित करना था.

फ्रांसीसी सैनिक, जो पहले अंग्रेजी से डरते थे, अब उन्हें ढूंढना और उनसे लड़ना चाहते थे. उन्हें इस जीत ने एक नया साहस दिया गया कि अगर जोन उनका नेतृत्व करेगी तो उनकी जीत निश्चित होगी.

जोन के अंदर की आवाज़ ने उसे बताया कि फ्रांस को बचाने के लिए उसके पास केवल एक साल था. उसके पास बहुत कम समय था. ऑरलियन्स से वो उन पास के अन्य शहरों में गई जहाँ पर अंग्रेज़ो ने कब्जा किया था.

इनमें से पहला शहर जारगाऊ था, जो ऑरलियन्स से केवल दस मील दूर था. वहां पर एक अंग्रेज रईस, अर्ल ऑफ सफोल्क कमांडर थे. लेकिन उनके सैनिक अभी ऑरलियन्स की हार से उबर नहीं पाए थे. जब उन्होंने जोन को उसके सफेद घोड़े पर हमला करते हुए देखा, तो वे डर के मारे लगभग पागल हो गए. फ्रांसीसियों सैनिकों ने जोन के साथ शहर में मार्च की और शहर पर कब्जा किया. उन्होंने अर्ल ऑफ सफोल्क को कैदी बनाया.

जोन ने अपने सैनिकों को आराम करने की अनुमति नहीं दी. अंग्रेज़ों को उबरने से पहले ही उसने उनपर दुबारा वार करने की योजना बनाई. उसने पच्चीस मील दूर एक और छोटे शहर, बेयगेंसी पर कब्ज़ा किया. फिर उसने उत्तर में बीस मील दूर पाटे में अपनी सबसे प्रसिद्ध जीत हासिल की.

यदि आप इन स्थानों को मानचित्र पर देखें तो वे एक त्रिकोण बनाते हैं जिसके मध्य में ऑरलियन्स स्थित है. त्रिकोण से बाहर निकलने के लिए जोन को उन्हें हराना आवश्यक था.

अब तक अंधविश्वास के आतंक से अंग्रेज सेना पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी थी. जब जून की सुबह जोन और उसके सैनिक अचानक धुंध से बाहर आए, तो उन्होंने आधी लड़ाई बिना लड़े जीत ली थी.

चौदह साल पहले,एगिनकोर्ट की लड़ाई में, अंग्रेजी तीरंदाजों ने मैदान में नुकीले खूँटों की एक पंक्ति धंसाकर खुदकी रक्षा की थी. इन खूँटों के पीछे से उन्होंने फ्रांसीसी शूरवीरों पर घातक तीर चलाए थे. इस बार जोन ने खूँटे गाढ़ने से पहले ही पाटे के अंग्रेज सैनिकों पर हमला किया. लड़ाई में फ्रांसीसी सेना ने एक तिहाई अंग्रेजी सैनिकों को मार डाला. बाकी भाग गए या उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया. उनके कमांडर लॉर्ड टैलबोट सहित कई अंग्रेजी शूरवीरों को पकड़ लिया गया.

रिम्स पहुँचने के लिए अभी लम्बा रास्ता बाकी था. पर अँगरेज़ इतने निराश थे, और जादू-टोने से इतना डरते थे, कि वे पेरिस वापस चले गए और कोई बाधा नहीं डाली. जोन ने अपने विजयी सैनिकों के साथ ट्रॉयज़ के रास्ते 200 मील की दूरी तय की.

रिम्स के महान गिरजाघर में चार्ल्स का राज्याभिषेक बड़े भव्य तरीके से किया गया. अपने गण वेश में चर्च के उच्च पुजारी, शानदार वेशभूषा में रईस और अद्भुत पोशाक में महिलाएं, सभी उस शानदार चर्च में मौजूद थे. लेकिन उस दिन सभी की नज़रे "जोन ऑफ़ आर्क" पर टिकी थीं.

वो चमकते कवच में, बैनर को पकड़े हुए फ्रांस को जीत दिलाने वाली "जोन ऑफ़ आर्क" ताज़पोश राजा के पास खड़ी थी. डोमरेमी की एक साधारण किसान लड़की के लिए वो एक अद्भुत क्षण था. वो अभी केवल सत्रह साल थी.

बादशाह के राज्याभिषेक के बाद जोन को लगा कि अब उसका मिशन समाप्त हो गया था. वह अपने गांव लोरेन लौटकर एक साधारण जीवन जीना चाहती थी. "भगवान की मंशा अब पूरी हुई," उसने कहा. "क्या अब मैं अपने भाइयों और बहनों के पास फिर से वापिस जा सकती हूं." लेकिन वैसा हुआ नहीं.

फ्रांसीसी सेना के कमांडरों को जोन से ईर्ष्या थी, पर वे जानते थे कि वही जीत के लिए जिम्मेदार थी. फ्रांसीसी सैनिक, जोन को बहुत चाहते थे और वे उसके पीछे-पीछे कहीं भी जाने को तैयार थे.

जोन के आने से पहले, केवल कुछ ही अंग्रेज सैनिकों के देखकर, सैंकड़ों फ्रांसीसी सैनिक मैदान छोड़कर भाग जाते थे. पर अब बाज़ी पलट गई थी. जोन बेहद बहादुर थी. उसके उदाहरण ने फ्रांसीसी सैनिकों में जोश भरा था और वे बड़ी बहादुरी से लड़े थे. जोन की अलौकिक शक्तियों की कहानियों ने जहाँ एक ओर फ्रांसीसी को प्रेरित किया, वहीँ उसने अंधविश्वासी अंग्रेजी के दिलों में आतंक पैदा किया.

जोन ने अपनी तलवार और कवच को रिम्स के चर्च में वर्जिन मैरी को समर्पित किया. विजय प्राप्त करने के बाद उसे आवाज़ें सुनाई देना बंद हो गई थीं. बार-बार उसने डोमरेमी वापस जाने की बात कही लेकिन हमेशा उसे जाने से रोका गया.

जोन बहुत दुखी थी. वह फ्रांस की नायिका थी; सभी आम लोग उससे प्यार करते थे; हर जगह लोग जोन के आशीर्वाद के लिए अपने घुटने टेकते थे. उसे देखकर मंझे हुए सैनिकों की आंखों में भी आंसू भर आते थे. लेकिन चार्ल्स सप्तम के दरबार में, जिसका मुकुट उसे जोन ने दिलवाया का जोन को ईर्ष्या और अवमानना झेलनी पड़ती थी.

पेरिस पर अभी भी अंग्रेजों का राज्य था. फ्रांसीसी कमांडरों को पता था कि जोन के नेतृत्व के बिना वो सैनिकों को प्रेरित नहीं कर पाएंगे उनके पास इसे लेने का बहुत कम मौका था. जोन की मर्ज़ी के खिलाफ उन्होंने उसे दुबारा फिर से युद्ध के मैदान में जाने के लिए मनाया.

भारी दिल के साथ जोन ने अपना कवच पहना. उसे अपनी चेतावनी याद थी कि उसके पास अपना काम पूरा करने को केवल एक साल था. वो साल अब निकल चुका था.

पेरिस पर हमला विफल रहा. फ्रांसीसी कमांडरों को जोन से ईर्ष्या थी. उन्होंने अपनी देशभक्ति त्याग दी थी. यद्यपि फ्रांसीसी सैनिक बहादुरी से लड़े लेकिन उनकी संख्या पर्याप्त नहीं थी, और अंग्रेजी सेना को लगातार बाहर से मदद मिल रही थी.

जोन ने अपनी सेना का साहस और खतरों की परवाह किये बिना नेतृत्व किया. हमेशा की तरह, वो वहां मौजूद थी जहाँ लड़ाई सबसे भयंकर थी. गेट ऑनर के हमले के दौरान, फ्रांसीसी सैनिकों ने पीछे हटना शुरू कर दिया. जोन अकेले ही आगे बढ़ी लेकिन वो उस लड़ाई में फिर से घायल हो गई. लड़ाई उसके चारों ओर चलती रही पर जोन एक खाई में लेट गई. लेकिन जोन को घायल देख सैनिकों का दिल टूट गया. वे पीछे हट गए, और जोन को अपने साथ लेकर मैदान छोड़कर चले गए.

फ्रांसीसी कमांडरों को गुप्त रूप से खुशी हुई कि जोन हार गई थी. चार्ल्स, जो कमजोर और एक कायर था अब बोर्जेस जाकर बस गया था.

जोन ने फिर से डोमरेमी लौटने की अनुमति मांगी लेकिन फिर से स्वार्थी राजा ने उसे अनुमति देने से इनकार कर दिया. उसकी बजाय, जोन को एक उपाधि दी गई और एक एक उससे आय का वादा किया गया. लेकिन उसका भुगतान कभी नहीं हुआ. डोमरेमी गांव को करों के भुगतान से छूट दी गई. जोन यह सोचकर खुश थी कि उसने जो कुछ किया उससे उसके पैतृक गाँव को फायदा हुआ था. लेकिन वो वहाँ अभी भी वापिस नहीं लौटी थी.

बरगंडी का ड्यूक अंग्रेजी के पक्ष में लड़ रहां था. अब वो एक समझौते के लिए सहमत हुआ जो अगले वर्ष 1430 के वसंत तक चला.

यह 1428 में था कि जोन ने ऑरलियन्स को छोड़ दिया. अंदर की आवाज़ों से वादा किया साल कब का बीत गया था. फिर पेरिस के दक्षिण-पूर्व में कुछ मील की दूरी पर मेलून में एक सफल लड़ाई में, उन आवाज़ों ने फिर जोन से बात की. "जब मैं मेलुन में प्राचीर पर थी," उसने कहा, "सेंट कैथरीन और सेंट मार्गरेट ने मुझे चेतावनी दी कि जल्द ही मैं पकड़ी जाऊंगी. मैंने प्रार्थना की, कि गिरफ़्तारी के बाद मैं तुरंत मर जाऊं और लंबे समय तक कैद में बंद न रहूँ. "

1430 की मई में, जोन ऑफ आर्क की आवाज़ों से मिली चेतावनी सही निकली.

ड्यूक ऑफ बरगंडी के सैनिकों ने कम्पेग्ने शहर का घेराव किया. चार्ल्स अभी भी बोर्गेस में था. जोन, फ्रांसीसी सैनिकों की एक टुकड़ी के साथ कम्पाइगेन में लड़ने गई. उसने बहादुरी के साथ हमले का नेतृत्व किया और शहर में लड़ाई लड़ी. ऐसा लगा जैसे ऑर्लेंस की जीत कॉम्पिग्ने में भी दोहराई जाएगी.

ऑरलियन्स में जोन ने एक के बाद एक करके शहर की मज़बूत चौकियों पर कब्जा किया था. वो हमले ऑरलियन्स में सफल रहे, और उसने उन्हें कॉम्पिग्ने में भी दोहराया. उसने कई बार चढ़ाई की पर अचानक जवाबी हमला हुआ. जैसे-जैसे फ्रांसीसी पीछे हटे, उससे जोन खतरे की जगह में फंस गई. फ्रांसीसी सैनिक अब शहर को छोड़ चुके थे. जोन घिरी हुई थी और तभी दुश्मनों ने उसे उसके घोड़े से नीचे खींचा.

जोन अब ड्यूक ऑफ बरगंडी के यहाँ एक कैदी थी. वह जानती थी कि निश्चित ही उसकी मृत्यु होगी, लेकिन उस नीच फ्रेंच रईस ने उसे 10,000 लीवर में अंग्रेज़ों को बेच दिया.

फ्रांस के कायर राजा ने उस किसान लड़की की मदद के लिए कुछ नहीं किया. उस लड़की ने फ्रांस को बचाया था और राजा को शाही ताज वापिस दिलाया था. अंग्रेज़ बस जो एक चीज़ सबसे ज़्यादा चाहते थे - वह थी अपने अपमान का बदला! वे जोन को खरीदने के लिए कुछ भी करने को तैयार थे.

जोन को पता था कि अगर वो अंग्रेजों के हाथों में पड़ी तो उसकी क्या दुर्गति होगी. उससे बचने के लिए वो जमीन से साठ फीट ऊपर खिड़की से नीचे कूद गई जिसमें वो बुरी तरह घायल हो गई. पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ा. जोन को उसके दुश्मनों को सौंप दिया गया और फिर कई हफ्तों तक उसे एक नम, अंधेरी कोठरी में जंजीरों से बाँधकर रखा गया.

उसके बाद जोन पर कानूनी मुकदमा चलाया गया. जोन को जादू-टोना करने के आरोप में दोषी पाया गया और उसे बीच बाजार में जलाकर मार डाला गया. जिस चर्च ने 1430 में जोन की निंदा की और उसे दोषी पाया, उसी चर्च ने 1919 में, जोन का एक संत के रूप में स्वागत किया.

जोन ऑफ़ आर्क की यह प्रसिद्ध प्रतिमा इमैनुएल फ्रेमिएट ने बनाई है. इसमें युद्ध से पहले स्वर्ग के मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करते हुए जोन ऑफ़ आर्क को उसके युद्ध कवच में दिखाया गया है.

समाप्त